स्वास्तिक और गणेश का आध्यात्मिक रहस्य

``स्वास्तिक'' शब्द का अर्थ है - `शुभ', `मंगलकारी'। इसलिए यह विघ्न-विनाशक गणपति का समानार्थक है। इसीलिए जब भी कोई नया कार्य प्रारंभ करते हैं तो स्वास्तिक बनाते हैं एवं गणेश की पूजा करते हैं ताकि उनके कार्य में कोई विघ्न या बाधा न हो।

स्वास्तिक वास्तव में सारे ज्ञान का सार चित्रित करता है। इसके बीच की दो रेखायें जो परस्पर एक-दूसरे को समकोण पर विच्छेद करती हैं, वे किसी एक वृत्त के दो व्यासों के समान हैं जो कि उस वृत्त को चार ऐसे बराबर भागों में बांटते हैं जो परस्पर विपरीत दिशा में हैं और इसलिए दार्शनिक दृष्टिकोण से विपरीत सामाजिक-राजनीतिक-धार्मिक स्थिति के संकेतक हैं। स्वास्तिक की चार भुजाएं इन्हीं चार विपरीत दिशाओं और दशाओं को इंगित करती हैं।

- ब्र. कु. गंगाधर

सबसे ऊपर की दायीं ओर की भुजा सतोप्रधानता, पवित्रता, सुख और शान्ति की स्थिति की द्योतक है और इसलिए यह सृष्टि-चक्र के सर्वप्रथम युग-सतयुग को चित्रित करती है।

इसके बाद दायीं ओर नीचे की दिशा चित्रित करने वाली भुजा धीरे-धीरे पवित्रता, सुख, शान्ति की कलाओं के ह्रास को जताती हुई त्रेतायुग की द्योतक है जिसमें भी सात्विकता, पवित्रता, सुख और शान्ति विद्यमान होते हैं यद्यपि कम मात्रा में। तत्पश्चात् बायीं दिशा में संकेत करती हुई भुजा इस बात को चित्रित करती है कि त्रेता के अंत में देवता वाम मार्ग में चले गए।

तभी से द्वापरयुग की शुरुआत हुई। धर्म ग्लानि आरंभ हो गई। जीवन वाम पक्ष की ओर मुड़ गया, अर्थात् उसमें अपवित्रता, दुःख और अशान्ति ने प्रवेश किया और समाज को विभाजित करने वाले कारण जैसे कि अनेक धर्म, अनेक भाषाएं, अनेक वाद शुरू हो गये और इनके परिणामस्वरूप लड़ाई-झगड़े, घृणा, द्वेष - ये भी दिनों-दिन बढ़ते चले गए।

इसके बाद स्वास्तिक की चौथी भुजा, जो बायीं ओर ऊपर की दिशा में उठी है, वो बुराई, लड़ाई, पापाचार, अत्याचार, विकार के बढ़ते जाने की द्योतक है। यहां तक कि धर्म की अति ग्लानि हो जाती है और कलियुग के अंत में घोर अज्ञानता, पापाचार, नरसंहार होता है।

अगर हम इन चारो दिशाओं को देखें तो हमें पता चलता है कि उनके साथ मानव मन की अवस्थाओं को भी चार दशाओं से गुज़रना पड़ता है। तो स्वास्तिक का दूसरा अर्थ है मानव की अपनी अवस्थाओं में आया परिवर्तन। जब आत्माएं प्रकृति के सानिध्य में आती हैं तब उनकी पवित्रता में धीरे-धीरे परिवर्तन आता है। सबसे पहले वो सतोप्रधान होने के नाते वहां प्रकृति और पुरुष दोनों ही पवित्र होने के कारण सुखी होते हैं। जैसे-जैसे वो पुनर्जन्म लेती है तब वो देह के आकर्षण में आती जाती है, पवित्रता की मात्रा कम होती जाती है और दुःख-अशांति में बढ़ोतरी होती चली जाती है। जब ये तीसरी दशाओं से गुज़रती है तब वो अपने आप को अर्थात् स्व-स्थिति को भूल जाती और सुख-शांति को ढूंढ़ने के लिए पूजा-पाठ आदि का सहारा लेती है। चौथी दशा में जब वो आती है तो पवित्रता की शक्ति की मात्रा बहुत ही कम रह जाती और वो अत्यंत दुःख-अशांति के काल में होती है। अगर सीधा-सीधा कहें तो स्वास्तिक अर्थात् (स्व-स्थिति,आत्मा की स्थिति)।

धर्म की अति ग्लानि की इस बेला में ही परमात्मा अवतरित होकर ज्ञान और योग की शिक्षा देते हैं। पुनः सतयुग की स्थापना करते हैं, मनुष्य को देवता बनाते हैं और नर को श्रीनारायण पद का अधिकारी बनाते हैं।

इस प्रकार स्वास्तिक विश्व के तीनों कालों के इतिहास का तथा आत्माओं के आवागमन के चक्र का रहस्य खोल कर हमारे सामने रख देता है। इस रहस्य को जान लेने से मनुष्य का कल्याण हो जाता है। अमंगल-मंगम में, अशुभ-शुभ में और अनिष्ट, निर्विघ्नता में परिवर्तित होता है। इसलिए जैसे गणपति ज्ञान-निष्ठ अवस्था के प्रतीक हैं, वैसे यह स्वास्तिक भी ज्ञान को एक रेखाचित्र द्वारा एक दृष्टि में ही समझा देता है और इसलिए इसे भी लोग गणेश ही कहने लगे हैं। जैसे वह हर शुभ कार्य - शेष पेज 3 पर

एकता से आती है एकाग्रता की शक्ति

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हम सबको मीठी शिक्षायें दी हैं, उन सभी बातों को ध्यान पर रखकर बाबा ने कहा प्रॉमिस करो, प्रॉमिस क्या करें, लेकिन संकल्प की दृढ़ता सफलता ले आती है। इतनी सेवायें हुई हैं, मैं साक्षी होके देखती हूँ, मैं वण्डर खाती हूँ कि बाबा ने क्या खेल रचाया है! साकार बाबा की मुरलियों में जो प्रेरणायें हैं वो सब प्रैक्टिकल हो रही हैं। नयी बात कुछ नहीं है।

मैं किस आधार से चल रही हूँ? साइलेन्स के आधार से। इकोनॉमी, एकनामी, एकाग्रता की शक्ति, एकता में रहना है। एकता से रहने में थोड़ी भी डिफीकल्टी है तो एकाग्रता की शक्ति नहीं है। एकाग्रता की शक्ति में विघ्न शब्द भी नहीं आयेगा। अनेक कार्य बाबा ने किये हैं, कराये हैं। संकल्प की दृढ़ता है, होना ज़रूरी है तो हो जाता है।

इसमें तीन बातें बहुत काम करती हैं, एक-जिसकी बात करें वो फेस पर न आये, इसका ध्यान रखा है। दूसरा - अगर अशरीरी बनने के अभ्यास की कमी है तो योग ठीक नहीं है। तीसरा - बाबा ने जो कहा वह हो जायेगा, अटल निश्चय है। एक बार बाबा को कहा, बाबा मकान छोटा है, बोला बच्ची, बड़ा हो जायेगा। हो गया। इन तीन बातों ने मुझे हमेशा सेफ और साफ रखा है। माया की छाया नहीं पड़ती है। प्रभु की छत्रछाया के नीचे चल रहे हैं। उस छत्रछाया में दूसरे भी आ जाते हैं। आजकल थोड़ा भी भाव-स्वभाव का या तो है चक्कर या है टक्कर। किसी के चक्कर में आते हैं तो वही अच्छा लगता है, टक्कर में आते हैं तो अच्छा नहीं लगता हैं। इसमें समय संकल्प चला जाता है। ऐसी बातों को अभी समाप्त करेंगे। अभी हम छोटे बच्चे नहीं हैं, कभी भी कोई अपना विचार देंगे तो बाबा ने कभी भी ना नहीं की होगी। सेवा का संकल्प आया तो कहता है भले करो। हो जायेगा।

रिस्पेक्ट और रिगार्ड, इसका मतलब क्या है! अगर मेरे को रिस्पेक्ट देने का संस्कार पड़ा तो मुझे सब रिगार्ड देंगे। एक बार मैंने किसी को रिस्पेक्ट नहीं दिया, तो लोग कहेंगे, ये तो हमेशा ही ऐसे करता है। जैसा हम करते हैं ऐसे ही सामने आता है, इसमें बड़ा खबरदार रहना है।

हर आत्मा का अपना पार्ट है। ड्रामा बना बनाया है। भगवान खुद कहता है, मैं भी ड्रामा के वश हूँ। ड्रामा की नॉलेज को रिस्पेक्ट देते हैं। ड्रामा की नॉलेज है मेरी माँ, देने वाला है बाप, मैं कौन हूँ! ड्रामा धीरज देता है, ऐसे माँ-बाप के बच्चे हैं हम। ऐसे चिंतन में रहो और कोई बातों की चिन्ता फिकर नहीं हो।

सुबह शाम, दिन रात, सोते जागते स्वचिंतन में रहना दवाई है। स्वचिंतन, शुभ चिंतन, श्रेष्ठ चिंतन एकदम दवाई का काम करता है। शुभचिंतन में अपनी स्थिति है, शुभचिंतक रहने में सबकी दुआ है, सभी खुश हैं। दुनिया को प्रेम चाहिए, सच्चाई चाहिए। हमारा हर काम विश्वास से हुआ है। बाबा में विश्वास है, बाबा का हम बच्चों में विश्वास है। मैं तो कहूँगी बाबा की शक्ति से, उसमें भी काम बाबा का है, कभी यह नहीं सोचा होगा कि यह बड़े खर्चे वाला है। यह सब जो हुआ है किसकी कमाल है!

आपस में एकता, हम सब जैसे एक हैं। मेरी यह भावना है कि किसी को भी कोई देखे तो उसके अंदर से निकले कि यह तो सब एक हैं। कोई बात है ही नहीं, बस मीठा बोलो।

जब वैल्यूज़ का प्रोजेक्ट शुरु हुआ तो उसमें कई सेवायें हुई हैं। अटेन्शन गया गुण और शक्तियाँ हमारे में हो। मेरी भावना है कि जो करना है अब कर लें, मुझे अपने लिए करना है, मैं पहले नहीं करूंगी तो मेरी आवाज़ निकलेगी ही नहीं, कि सब करें। निमित्त भाव में बहुत सुख है। अभी प्रैक्टिकल लाइफ में 6 वैल्यूज़ ज़रूर चाहिए, सत्यता, पवित्रता, धैर्यता, नम्रता, गम्भीरता, मधुरता, बाबा की यह बातें प्रैक्टिकली अपने में आ जायें तो दूसरों में अपने आप आ जायेंगी। बाकी बाबा को प्रत्यक्ष करने की सेवायें तो हुई हैं। मैं जो कर रही हूँ, बाबा को फॉलो कर रही हूँ। मैं समझती हूँ अटेन्शन रखने से सेवा में सफलता हुई पड़ी है। परन्तु सच्चाई से विधिपूर्वक पुरुषार्थ करने से जो सफलता मिलती है उसमें बाबा और ताकत देता है।

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

केवल बाबा का सुनो, सोचो और विचार सागर मंथन करो

बाबा के बच्चे अलग-अलग रहते भी ऐसे ही लगता है, जैसे सब एक साथ रहते हैं। एक दो को मिलते हैं, रूहरिहान करते हैं, बाबा की बातें वर्णन करते हैं, हमारे लिए तो संसार ही यही है। भल सेवा के लिए अलग-अलग रहते हैं, परंतु मन से तो मिलते ही रहते हैं। जब मेरा भाई, मेरी बहन कहते हैं तो मेरा बाबा याद आता है।

हमें अब ज़्यादा विस्तार में नहीं जाना है, बाबा की याद में सार में रहना है। इतना तो ज्ञान है कि हम सब देवता बनने वाले हैं, अभी तक बना तो कोई भी नहीं है। कौन कहता है मैं बन गया ? अभी सब पुरुषार्थी हैं। बाबा रोज़ मुरली में ध्यान खिंचवाते हैं। यह नहीं सोचो मैं सब सुन चुकी, मैं बन चुकी, नहीं! बन रहे हैं। बाबा जब तक है, हमारा यह सुनना और सुनाना चलता ही रहेगा। जितना सुनें और धारणा करें उतना ही अच्छा है। आपस में रूहरिहान भले करो लेकिन जो धारणायुक्त है वही बोलो। वही अच्छा है। मूल बात है खुश रहो। छोटी-छोटी बातों में अपना मूड ऑफ नहीं करो, क्योंकि हमको बाबा के नज़दीक आना है। अभी भी नज़दीक रहते हैं, तो भविष्य में दूर थोड़ेही रहेंगे। तो नज़दीक आने के लिए ज़रूरी है जो बाबा कहते हैं वही बोलो। सबकुछ जानकर, स्पष्ट करके अपने को भी स्पष्ट करो। कई ऐसे होते हैं जो होता कुछ भी नहीं, लेकिन बात ऐसे करते हैं जो सुनने वाले समझते हैं कि नम्बरवन तो यही हैं। लेकिन हमें ऐसा नहीं बनना है, जहां सच्चाई है वहाँ सबकुछ है। जो भी है वह सच्चे दिल से अपने व दूसरे में धारणा देखें। तो कुछ भी हो, खुशी नहीं गंवाना। बस, बाबा और मैं, और बातों में नहीं जाओ। बाबा की मुरली ऐसी है जो हम उसको मनन करते-करते सारा दिन ही बिता दें, यह विशेषता चाहिए। बाबा की मुरली बहुत सहज है, इतना साल जो मुरली पढ़ी है तो अभी उसका अभ्यास करो, बस यह अटेन्शन रखो, और बातों में न जाओ। चेक करो जो बाबा ने कहा वो हमने कहां तक किया, बस वो करना है, तो स्वतः ही यहां का वातावरण शक्तिशाली हो जायेगा। और बातों में नहीं जाना है क्योंकि समय का कोई भरोसा नहीं, कभी भी कुछ भी हो सकता है, फिर सोचेंगे कि यह नहीं करते तो यह करते। उस समय टाइम ही ऐसा होगा, हाँ या ना का, इसलिए अपने को बचाते हुए वही करो जो बाबा कहते हैं। और कोई बात सोचने की व बातों में जाने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि बाबा से बढ़कर तो कोई है नहीं। बाकी सबके गुण उठाओ। पुरुषार्थ में आगे जाने की जो प्वाइन्ट्स हैं वह अपने पास नोट करके देखो। मुरली जो है वह बाबा की है और कोई की नहीं। यह मुरली बहुत अच्छा सुनाती है, यह अच्छा बोलती है, यह भी दैहिक आकर्षण है, जो अब नहीं होनी चाहिए। मुरली बाबा की है, मुरली सुनकर एक बाबा ही याद आये। बाबा की मुरली में कुछ भी मिक्स नहीं करना चाहिए, बस बाबा और मैं। कई मुरली में कहानियां सुनाते हैं जिससे सुनने वाले को इन्ट्रेस्ट आये लेकिन उससे फायदा कुछ भी नहीं, बाबा के बजाए उसकी ही याद आयेगी जिसकी कहानी सुनाते हैं। और कोई बात सोचो नहीं, केवल बाबा का सुनो, सोचो और विचार सागर मंथन करो। जो भी कुछ लिखते व पढ़ते हो सब बाबा की मुरली से सम्बन्धित हो। भले कोई दूसरे क्लास कराते हैं लेकिन वह भी बाबा की मुरली का ही रिपीट करते हैं, तो वह भी कहो बाबा ने कहा। सीखा किससे ? बाबा से। बाबा बोलता है तभी तो रिपीट करते हैं। कितना भी कोई अच्छा बोले लेकिन बाबा, बाबा है। बाबा के बजाए फलाने की मुरली सुनें, यह भी गलत है। सीखा किससे ? होशियार बनी किससे ? बाबा ने बनाया ना! बाबा कहने से आवाज़ और चेहरा दोनों ही बदल जाता है। सदा बाबा की बातें सुन आगे बढ़ते रहो यही हमारी शुभ कामना है।